आरती भगवान शिव जी की

जय जय हे शिव परम पराक्रम, ओंकारेश्वर तुम शरणम् ।
नमामि शंकर भवानि शंकर, दीनजन त्वं शरणम् ।।टेक।।

दशभुज मंडप पंचबदन शिव, त्रिनयन शोभित शिव सुखदा ।
जटाजूट सिर मुकुट बिराजै, श्रवण कुण्डल अति रमणा ।।

ललाट चमकत रजनी नायक, पन्नग भूषण गौरीशा ।
त्रिशूल अंकुश गणपति शोभा, डमरु बाजत ध्वनि मधुरा ।।

भस्म विलेपन सर्वांगे शिव, नन्दी वाहन अति रमणा ।
वामांगे गिरिजा हैं विराजित, घंटा नाद की धुनि मधुरा ।।

गज चर्माम्बर बाघाम्बर हर, कपाल माला गंगेशा ।
पंचबदन पर गणपति शोभा, पृष्ठे गिरिपति ज्वालेशा ।।

सिद्धेश्वर अमलेश्वर शंकर, श्री कपिलेश्वर कोटीशा ।
कपिला संग में निर्मल जल है, कोटि तीरथे भय हरणम् ।।

नर्मदा काबेरी केल से, गंगमध्य शोभित गिरशिखरा ।
इन्द्रादिक सुरपति सेवत, रम्भादिक ध्वनि अति मधुरा ।।

मंगल मूर्ति प्रणवाष्ट क शिव, अद्भुत शोभा त्रिय भवन ।
सनकादिक मुनि करत स्तोत्र, मनवांछित फल भय हरणम् ।।

प्रणवाष्टक पद ध्याय जनेश्वर, रचयति विमल पदवाष्टम् ।
तुमरि कृपा त्रिगुणात्मा शिवजी, पतित पावन भयहरणम् ।।

विवरण

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.

हे परम परमात्मा शिव ओंकारनाथ आपकी जय हो । हम आपकी शरण में आये हैं। हे माता भवानी के शंकर हम दुःखी जन आपकी शरण में आये हैं । दस भुजाओं से घिरे हुए पाँच बदन वाले शिव, आप सुख को देने वाले हो, आपका तीसरा नयन बड़ा ही शोभित हो रहा है ।

आपका सिर जटाओं से घिरा हुआ है, जो मुकुट के समान प्रतीत हो रहा है तथा आपके कानों का कुण्डल बड़ा ही प्यारा लग रहा है । आपके चमकते ललाट मानो रात्रि के सारे अन्धकार को हरने वालें हैं तथा माता गौरी के आप ईश्वर (पति) हैं । आप त्रिशूल को घारण करने वाले हो ।

आपकी गोद में बैठकर गणेश जी अपकी शोभा और भी बढ़ा रहें हैं, आपके डमरु के ध्वनि की आवाज अत्यन्त मधुर लग रही हैं । आप अपने सभी अंगों में भस्म लपेटे हुए हैं तथा नन्दी का वाहन आपको बहुत ही प्यारा लग रहा है । आपके वाम अंग में माता गिरिजा (पार्वती)विराजित हो रही हैं, तथा घंटे की ध्वनि अति मधुर लग रही है ।

आप हाथी के चमड़े के वस्त्र तथा बाघ के छाले के वस्त्र घारण करने वाले हैं तथा गंगा आपके माथे की माला बनी हुई हैं । आपके पंचवदन पर गणेश जी शोभित हो रहें हैं । आप सभी सिद्धियों को प्राप्त किये हुए ईश्वर हैं एवं सभी दोषों से रहित हैं तथा आपका वर्ण शुभ्र है तथा आप हमेशा शुभ्र वर्ण के बैल पर सवार रहते हैं एवं आपके साथ निर्मल जल वाली गंगा भी रहती हैं जो अनेक तीर्थों का फल देती हैं तथा भय का निवारण करती हैं ।

हे शिवशंकर आप मंगल के मूरत हो तथा जीवन देने वाले
भी आप ही हो, आपकी अद्‌भुत शोभा तीनों भुवन में शोभित हो रही है । सारे देवता एवं मुनि आपके स्तोत्र कहते हैं तथा मन के अनुसार फल पाकर सारे भय से दूर हो जाते हैं। ये प्राणों को देनेवाले ईश्वर के पदों के महिमा की गाथा हम नित्य गाते हैं । हे त्रिगुण आत्मा वाले प्रभु जी आप हम पतितों को दुःख एवं भय का हरण करके हमें पवित्र बना दो ।